

zu KUMĀRAS. 6, 46. अमदयत्सकृत्कारलता मनः RAGH. 9, 29, 41. MĀLAY. 20. मनः प्रह्लादयत्तीर्भिमदयत्तीर्भिरप्यलम् (v. l. मन्दय०) Spr. 2102. 3194. जगति मदयन् (कामः) PRAB. 6, 4. BHATT. 10, 27, 12, 87. med. des Metrums wegen: (मद्यम्) वितोभ्येन्द्रपचेत्तसि वीर्यं मदयते ऽचिरात् Suçr. 1, 192, 1. Vgl. मदयत्ती. — 2) med. a) sich ergötzen, fröhlich sein, sich wohl befinden, sich behagen lassen: सर्वने मादयस्व RV. 7, 29, 2. 38, 8. 39, 5. वे विश्वे अमृता मादयते 1, 59, 1. 184, 2. मादयस्व सुते सचा 81, 8. यज्ञे बर्हिषि 101, 9. 10. अमृतसः 83, 6. कृविषा 10, 14, 4. (चमसे) देवा अमृता मादयते 16, 8. अन्नममोदत्तं हि 1, 82, 2. VS. 2, 31, 7, 5. 20, 46. KAUC. 6, 73. 88. मनो मादयते यस्य शस्त्राभ्यासरसायनात् Durgād. im ÇKDn. — b) ein Leben der Freude führen, selig sein: ये मध्ये दिवः स्वधया मादयते RV. 10, 13, 14. 1, 108, 12. स्वर्ग उ त्वमपि मादयसे 10, 93, 18. 1, 101, 8. यद्वा प्रन्नवेषो दिवो मादयसे स्वर्गरे 8, 34, 2. TBR. 3, 1, 4, 15 in Z. f. d. K. d. M. 7, 270. यत्र पितेरा मादयते BHĀG. P. 5, 2, 21. — Vgl. मन्दय.

— अनु mit Freudenbezeugung empfangen oder begleiten, zujubeln, zujauchzen; mit dem acc.: (सविता) रैरिहैदयन्मुग्धमानः RV. 7, 63, 3. 10, 98, 8. जयते वानु देवा मन्दतु 6, 73, 18. वा शयौ मदयन्तु माहन्तम् 8, 15, 9. 9, 8, 4. 5, 36, 2. 6, 18, 14. 7, 18, 12. अनु हि तौ सुते सौम मदीमसि 9, 110, 2. ये वा नूनमनुमदन्ति विप्राः 3, 47, 4. 1, 103, 7. 162, 7. 4, 17, 5. 38, 3. तै नो देवा अनुमदन्तु यज्ञम् TBR. 3, 1, 4, 14 in Z. f. d. K. d. M. 7, 270. अमन्दन्विन्दन्मु दातिवाराः RV. 3, 51, 9. VS. 6, 20. 27, 8. ÇAT. Br. 2, 5, 4, 6. 1, 4, 2, 7. partic.: विप्रानुमदित TS. 2, 3, 9, 1. Āçv. Çr. 1, 3. Statt अनुमत्त DAÇAK. in BENF. Chr. 200, 14 ist einfach अनुमत्त zu lesen. — Vgl. अनुमाद्य.

— अभि 1) heiter —, lustig sein: वृत्रे वाप्स्वर्धि प्रूर मन्दसे RV. 10, 50, 2. अभिमाद्यन्वि हि सुरा पीवा वदति ÇAT. Br. 1, 6, 2, 4. 5, 5, 2, 5. — 2) ergötzen, erheitern: यदीं सुतासु इन्देवा ऽभि प्रियममन्दिषुः VĀLAKH. 2, 3. — Vgl. अभिमाद्यत्क.

— अय, अयमदन् KĀTH. 23, 7 in Ind. St. 3, 467, 8 wohl fehlerhaft für अनुमदन्.

— उद् 1) von Sinnen kommen, verwirrt werden, den Verstand verlieren: गन्धर्वाप्सुरतो वा रतमुन्मादयति य उन्माद्यति TS. 3, 4, 8, 4. उद्वा माद्यैर्युग्ममानाः प्र वा मीयेरन् 7, 3, 20, 4. ईश्वरो वा एष दिशो ऽनुमदितोः TBR. 1, 8, 2, 1. 6, 2, 6, 7, 3, 1. ÇAT. Br. 5, 5, 2, 2. PANĀV. Br. 12, 10, 10. यः पश्यति नो देवान् ज्ञायद्वा शयितो ऽपि वा । उन्माद्यति स तु निप्र तं तु देवयक् विदुः ॥ MBh. 3, 14501. fgg. KATHĀS. 13, 65. उन्मत्त von Sinnen seiend, gestört, verrückt (auch unegig.) AK. 2, 6, 2, 11. H. an. 3, 254. MED. t. 101. AIR. Br. 2, 7, M. 3, 161. 8, 67. 163. 205. 9, 79. 201. 230. JĀG. 2, 32. MBh. 3, 2106. 2272. 2354. 2314. 2578. 15416. 15419. 16862. R. 2, 73, 30. Spr. 476. 1117. 2900. 3334. 3798. 4681. VARĀH. BRH. S. 27, 7. 46, 97. VID. 178. KATHĀS. 12, 51. 60. RĀGA-TAR. 5, 81. DAÇAK. in BENF. Chr. 200, 14. KĀURAP. 3. उन्मत्ता विलपन्ती माम् MBh. 3, 2422. R. 3, 53, 8. betrunken, berauscht, von einem Wahn ergriffen: मदिरान्मत्त, मोक्षमदिरान्मत्त MAITRĀJ. 4, 2. Spr. 339. मक्षसुराः VP. bei MUIR, ST. IV, 218. Spr. 3246, v. l. बलोन्मत्त R. 1, 54, 10. सिंहे मदीन्मत्तः Spr. 2440. 4312. विभवोन्मत्तचित्त 1224. लदाभ्योन्मत्तेन समुद्रेण PANĀT. 84, 9. उन्मत्तचण्डाष्टापदकुलसंकुलगिरिगङ्गराणि wüthend UTTARABHĀK. 32, 17. उन्मत्ता गौरिवान्धा श्रीः क्वाचिदेवावतिष्ठते MBh. 5, 1511. योवनोन्मत्तनयनाः (योषितः) aufgeregt R. 1, 9, 7. — 2) erheitern, ergötzen: उद्वा सुतासो रभसा अम-

न्दिषुः RV. 1, 82, 6. 2, 33, 6. उद्वा मन्दतु स्तोमाः 8, 53, 1. 9, 81, 1. — Vgl. उन्मत्त fgg., उन्मद्, उन्मदिषु, उन्माद् fgg. — caus. aufregen, in Ekstase versetzen; verwirrt machen, von Sinnen bringen, verrückt machen: उन्मदिता मैनेयेन वातां आ तस्थिमा व्यम् RV. 10, 136, 3. अद्यापि मे कृदयमुन्मदयति Verz. d. Oxf. H. 130, b, 29. उन्मादयति TS. 3, 4, 8, 4 (s. oben u. 1.). वृषेण चोन्मादयतीव माम् MBh. 4, 379. R. 3, 23, 24. DAÇAK. 61, 9. 78, 15. 88, 7. Vgl. अनुमदित.

— प्रौढ anfangen toll —, wüthend zu werden: प्रोन्माद्यद्विन्ध्यगन्धद्विप Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 9, Çl. 32.

— उप aufmuntern, Muth einsprechen: तमुपमदन्ति वीर्यवान् वै त्वमस्यलं वै त्वमेतस्मा असीति ÇAT. Br. 1, 4, 2, 1. — Vgl. उपमाद्.

— परि s. परिमाद् fgg.

— प्र 1) sich ergötzen: मधो वा नाम् माहन्तं यज्ञत्राः प्र यज्ञेषु शर्वमादन्ति RV. 7, 57, 1. heiter sein, frohlocken: स प्र ममन्दहाया शतक्रतो 8, 50, 9. या वा ज्ञो भूमिरिति प्र मन्दते निर्भरिति वाक्हे परि वेद freudig nennt (möglicher Weise zu 2. fälschlich nennt) VS. 12, 64. प्रमत्त aufgeregt, brünstig: वनगज PANĀT. 80, 6. geil M. 4, 40. berauscht, trunken: कथं प्रमत्तः प्रयमं कृतमिव (न स्मरति) ÇĀK. 76. — 2) achtlos sein, sich gleichgültig abwenden von (abl. P. 1, 4, 24, Vārt. Vop. 3, 20), nicht achten auf (loc.), sich eine Unachtsamkeit zu Schulden kommen lassen: मा जीवेभ्यः प्र मदे मानु गाः पितृन् AV. 8, 1, 7. प्र ये गूहादर्ममुत्स्वाया RV. 7, 18, 21. प्रमाद्यति ÇAT. Br. 11, 3, 1, 7. मा प्रमदत 13, 4, 2, 17. धर्मात्प्रमाद्यति P. 1, 4, 24, Vārt., Sch. स्वाध्यायान्मा प्रमदः TAITT. Up. 1, 11, 1. 2, 5. एतेभ्यश्चैव मान्धातः सततं मा प्रमादिद्याः MBh. 12, 3456. BHATT. 18, 8. त्रिष्वप्रमाद्यतेषु M. 2, 232 (MBh. 12, 3996). तस्माद्धर्मार्थयोर्नित्यं न प्रमाद्यति पाणिताः MBh. 3, 1291. कार्ये Spr. 4809. गुणितां क्ति BHATT. 17, 39. वालं प्रमाद्यत्तम् KATHOP. 2, 6. MBh. 8, 1873 (wo वा mit der ed. Bomb. zu lesen ist). 12, 3409. 3412. Spr. 3313. 4378. BHATT. 3, 8. मा प्रमादीः MBh. 2, 2488. प्रमाद्यसे किम् 8, 679. अग्रमादम् eifrig KAUC. 98. अग्रिमेता त्रयी विद्या यज्ञाश्च सकृदलिपाः । सर्व एव प्रमाद्यति (gerathen in Verwirrung) यदा राजा प्रमाद्यति MBh. 12, 3410. प्रमत्त sorglos, achtlos, fahrlässig Āçv. GRH. 1, 6, 7. Ind. St. 2, 312. M. 3, 34. 9, 78 (= यूतादिप्रमादवत् KULL.). MBh. 3, 2941. 14, 1760. R. GORR. 1, 23, 13. RAGH. 19, 48. Spr. 1117. 2090. 2257, v. l. 2720. चौराः प्रमते जीवन्ति 3067. 3298. 4681. KĀM. NITIS. 10, 34. DAÇAK. in BENF. Chr. 196, 21. BHATT. 7, 18. ०मन्सु MBh. 3, 7223. ०चित Spr. 4336. मृग BHĀG. P. 5, 2, 7. विद्येः nicht achtend auf, vernachlässigend Vop. 3, 20. स्वाधिकारं ० MEGH. 1. अग्रमत्त (s. auch bes.) KĀND. Up. 1, 3, 12. KATHOP. 6, 11. JĀG. 3, 59. MBh. 12, 3457. R. 6, 7, 3. Spr. 1300. 4378. KATHĀS. 43, 149. स्वकर्मणि MBh. 2, 1467. याने शय्यासने पाने भोज्ये वस्त्रे विभूषणे । सर्वत्रैवाग्रमत्तः स्यात् KĀM. NITIS. 7, 9. अग्रमत्तेन ते (= त्वया) भाव्यं सदा प्रति पुरंदरम् MBh. 13, 2270. — 3) über Etwas (loc.) seine Pflicht vergessen, sich in Bezug auf Etwas gehen lassen: अतो ऽर्थाग्रं प्रमाद्यति प्रमदामु विपद्यतिः M. 2, 213. पानस्त्रीयूतगोष्ठीषु राजानम् — प्रमाद्यत्तम् Spr. 1767. प्रमत्तं प्राप्यधर्मेषु MBh. 3, 16201. प्रमत्तः कामभोगेषु R. 3, 37, 2 (33, 2 ed. Bomb.). — Vgl. 1. प्रमद्, प्रमदन्, प्रमदितव्य fgg., प्रमाद्, प्रमादिका fgg., प्रमन्द. — caus. 1) Etwas verschoren: प्रमादितो कीर्तिमिव R. 5, 21, 10. — 2) med. sich ergötzen, sich gütlich thun an: प्र चर्षणी मादयेयो सुतस्य RV. 1, 109, 5. Wegen RV. 4,